

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 3: यहूदी संप्रदाय और संस्थाएँ

डॉ. टेड हिल्लेब्रांट

A. फ़ारसी से यूनानी शासन [00:00-5:12]

ए. फ़ारसी से ग्रीक टेटरार्क्स

[लघु वीडियो: AB को संयोजित करें; 00:00-7:22]

आज दोपहर नए नियम की पृष्ठभूमि पर वीडियो के अगले सेट में आपका स्वागत है। पिछली बार हमने नए नियम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ एक ऐतिहासिक परिदृश्य तैयार किया था। हमने फारसियों और साइरस द ग्रेट से शुरुआत की, जो एक तरह से मसीहाई व्यक्ति थे, पुराने नियम से एक "अभिषिक्त व्यक्ति"। हम फारसी साम्राज्य में डेरियस के पास गए, जो फारसी साम्राज्य का महान आयोजक था और फिर डेरियस ही वह व्यक्ति था जिसके अधीन दूसरा मंदिर बनाया गया था। यह दूसरा मंदिर हमें यीशु के समय में ले जाएगा, यीशु दूसरे मंदिर में आएंगे जिसे हेरोद द ग्रेट ने बहुत ज़्यादा पुनर्निर्मित और विस्तारित किया था। फारसियों ने मिस्र, तुर्की और मेसोपोटामिया पर विजय प्राप्त की। उनका एक विशाल साम्राज्य था, जो सिंधु नदी तक फैला हुआ था। फिर उन्होंने यूनानियों के साथ लड़ाई शुरू कर दी। कई सालों तक यह यूनानियों के साथ चलता रहा।

फिर सिकंदर महान आया, उसने अपने पिता, मैसेडोन के फिलिप की सेना को अपने अधीन कर लिया, और उस सेना को तुर्की में ले गया, फारसियों को हराया और फिर मिस्र में, मेसोपोटामिया तक और फिर सिंधु नदी, अफगानिस्तान, ईरान तक; और मूल रूप से लगभग दस या बारह वर्षों में पूरी दुनिया को जीत लिया। फिर सिकंदर की मृत्यु जल्दी हो गई, अपने 32^{वें} या 33^{वें} वर्ष में। उसका बच्चा सत्ता संभालने के लिए बहुत छोटा था, इसलिए उसके चार सेनापतियों ने सत्ता संभाली। मूल रूप से, एंटीगोनस को सीरिया में मेसोपोटामिया क्षेत्र मिला और टॉलेमी को दक्षिण और मिस्र मिला। फिर टॉलेमी को इज़राइल मिला। मिस्र में टॉलेमी, टॉलेमी I, II, III, IV, V... जो भी हो, इन टॉलेमी की संख्या लगातार बीस या तीस है। लगभग सौ साल तक, लगभग 300

से 200 ईसा पूर्व तक टॉल्मी सहिष्णु थे और उन्होंने इज़राइल पर शासन किया और वास्तव में उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने हिब्रू ओल्ड टेस्टामेंट का हिब्रू और अरामी में ग्रीक में अनुवाद किया और इसे सेप्टुआजेंट, LXX कहा जाता था। अब हमारे पास एक ग्रीक बाइबिल है जिसे दुनिया अब टॉल्मी के सहिष्णु होने के परिणामस्वरूप पढ़ सकती है।

लगभग 200, लगभग 198 ईसा पूर्व में, सीरियाई, मूल रूप से सीरियाई लोग नीचे चले गए और इज़राइल पर कब्जा कर लिया, और यह तब हुआ जब एंटीओकस एपिफेनीज़ और फर्स्ट मैकाबीज़ हुआ। जबरदस्त सांस्कृतिक युद्ध हुए, जहाँ सीरियाई यहूदियों को हेलेनिज़्म का पालन करने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रहे थे। वे उन्हें सूअर का मांस खाने, खतना न करने, धर्मग्रंथों को जलाने और मंदिर को अपवित्र करने के लिए मजबूर करते हैं। इसलिए मूल रूप से पाँच मैकाबीज़ लड़के उठ खड़े हुए और उन्होंने सीरियाई लोगों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी और मंदिर को शुद्ध किया। अंत में, सीरियाई और इज़राइल के बीच एक समझौता हुआ। सीरिया और इज़राइल के बीच यह तनाव हज़ारों सालों से चला आ रहा है।

फिर मूल रूप से जो होता है वह यह है कि पाँच मैकाबीज़ में से एक साइमन (जुडास योद्धा था, जोनाथन राजनयिक था) उच्च पुरोहिती स्थापित करता है और जिसे "हसमोनियन वंश" कहा जाता है उसे स्थापित करता है। हसमोनियन राजवंश जॉन हरकेनस तक आता है जहाँ फरीसियों का परिचय होता है और फिर अलेक्जेंडर जानियस और सलोमी अलेक्जेंडर तक आता है।

हेस्मोनियन आपस में लड़ने लगते हैं और यही वह समय होता है जब रोम तस्वीर में आता है। रोम कहता है, 'हमें कर चाहिए और तुम लोग लड़ नहीं सकते,' और इसलिए रोम हस्तक्षेप करता है। पोम्पी परम पवित्र स्थान में जाता है और हेरोदेस को लगभग 37 ईसा पूर्व यहूदियों के राजा के रूप में सिंहासन पर बिठाया जाता है हेरोदेस क्लियोपेट्रा और एंटनी, विशेष रूप से क्लियोपेट्रा के साथ नहीं मिलता था। हेरोदेस अपनी पत्नी मरियमने को मार देता है, जो एक हेस्मोनियन थी, जो मैकाबीज़ के साइमन के वंश से थी। हेरोदेस ने शादी की, लेकिन फिर उसने उसे और साथ ही अपने बेटों को भी मार डाला। तो अब हमारे पास जो है वह कुछ नया है। हेरोदेस की मृत्यु लगभग 4 ईसा पूर्व में हुई और इसलिए यीशु का जन्म वास्तव में लगभग 5 ईसा पूर्व हुआ था हम जानते हैं कि हेरोदेस की मृत्यु हुई, मुझे लगता है कि चंद्र ग्रहण या कुछ और था और जब

उन्होंने 625 ई. से लेकर ईसा के समय तक का समय निकाला, तो वे ईसा के जन्म से लगभग चार या पाँच साल पीछे रह गए। आधुनिक उपकरणों के बिना लगभग 600 साल पीछे जाने के बाद यह बुरा नहीं है। अब हम ग्रहणों और अन्य चीज़ों के ज़रिए जानते हैं कि हेरोदेस की मृत्यु लगभग 4 या 5 ईसा पूर्व हुई थी और ईसा का जन्म संभवतः लगभग 5 ईसा पूर्व हुआ था

बी. टेट्राक्स [5:12-7:22]

अब हेरोदेस के मरने के बाद हमारे पास टेट्राक्स हैं। ये टेट्राक्स सत्ता संभालते हैं और वे नए नियम में दिखाई देते हैं। और इसलिए आप देख सकते हैं कि शीर्ष व्यक्ति, हमारे पास अर्खेलॉस है। अर्खेलॉस को पाई का सबसे बड़ा टुकड़ा मिला। उसे यहूदिया मिला, जो मूल रूप से यहूदा का आदिवासी क्षेत्र है जो मृत सागर के पश्चिम में, यरूशलेम के नीचे है, उसे इदुमिया मिला, पुराना एदोमी क्षेत्र जो मूल रूप से इज़राइल के दक्षिण में है, और मृत सागर के दक्षिण, दक्षिण पूर्व की ओर है जहाँ एदोमी लोग रहते थे। और उसे सामरिया भी मिला। तो उसे न केवल यहूदिया मिला, बल्कि यहूदिया और सामरिया भी मिला; इसलिए उसे पाई का सबसे बड़ा टुकड़ा मिला, अगर आप चाहें तो एक तरह से दोगुना हिस्सा। अपने जीवन के बाद में, लगभग 6 ईस्वी में उसे रोमनों द्वारा गॉल में निर्वासित कर दिया गया और इसलिए अर्खेलॉस काफी पहले ही गायब हो गया। हेरोदेस एंटीपस गलील में हेरोदेस एंटीपस बनने जा रहा है जिससे यीशु और जॉन बैपटिस्ट मिलेंगे। हेरोदेस एंटीपस ने गैलिली और पेरिया को उत्तर की ओर और आगे बढ़ाया। यह हेरोदेस एंटीपस ही है जो जॉन बैपटिस्ट को मारता है। जॉन बैपटिस्ट ने हेरोदेस के बारे में कहा कि उसे अपने भाई, फिलिप की पत्नी से शादी नहीं करनी चाहिए। हेरोदियास की बेटी ने हेरोदेस के सामने नृत्य किया और उसने कहा, 'मैं तुम्हें अपना आधा राज्य या जो भी तुम चाहो दे दूँगा,' और उसने कहा, 'मुझे एक थाली में जॉन बैपटिस्ट का सिर चाहिए' और हेरोदेस एंटीपस ने जॉन बैपटिस्ट का सिर काट दिया; और इसलिए वह एक बहुत बुरा आदमी है। हेरोदेस फिलिप दूसरा भाई है और वह हेरोदियास का पूर्व पति था, और वह गैलिली सागर के पूर्व में गोलान हाइट्स में है। तो हमें मूल रूप से ये तीन लोग मिलते हैं, वे उन्हें टेट्रार्क कहते हैं, मैं कभी समझ नहीं पाया, टेट्रा - टेट्रा का मतलब चार होता है, कैसे केवल तीन भाई हैं? ऐसा प्रतीत होता है, या कुछ लोग सोचते हैं कि अर्खिलाउस को दोहरा

हिस्सा मिला, इसलिए मूल रूप से चार क्षेत्र हैं और अखिलाउस को उनमें से दो क्षेत्र मिले, यहूदिया और सामरिया। तो इस तरह से यह हेरोदेस महान के बाद इन चार टेट्राक्स और इन अलग-अलग क्षेत्रों में विभाजित हो गया और इस तरह से इज़राइल को विभाजित किया गया।

सी. यहूदी परंपरा—फरीसी [7:23-9:43]

बी. यहूदी पृष्ठभूमि: तार्गम्स, मिड्रैश, मिश्राह, स्पूडेपिग्राफा

[लघु वीडियो: C- H को मिलाएं; 7:23-22:45]

वहाँ से, मैं जो करना चाहूँगा वह है संवाद को इतिहास से हटाकर अधिक समाजशास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रकार की चीज़ों की ओर ले जाना, विशेष रूप से उस समय के यहूदी साहित्य और उस समय के यहूदी संप्रदायों से निपटना। अब आपको सावधान रहना होगा कि आप 'यहूदी संप्रदाय' कैसे कहते हैं, लेकिन ये "संप्रदाय" हैं जिन्हें संप्रदायों के रूप में लिखा जाता है। सबसे पहले मैं फरीसी को देखना चाहूँगा। फरीसी कहाँ से आए और वहाँ क्या हो रहा था? तो चलिए फरीसी के इतिहास को देखते हैं। ये लोग बड़े पैमाने पर जॉन हरकेनस के समय में आए और पहली बार पहचाने गए, लगभग 104 - 110 ईसा पूर्व में। तो लगभग 110 ईसा पूर्व में आपको फरीसी मिलते हैं। याद रखें कि फरीसी को जॉन हरकेनस ने अस्वीकार कर दिया था और उसने सैकड़ों फरीसी को सूली पर चढ़ा दिया था। तो फरीसी और सद्दूकियों के बीच 100 ईसा पूर्व से ही तनाव चल रहा है।

फरीसी तब, काफी हद तक मौखिक परंपरा से सहमत थे। जब आप 'परंपरा' शब्द कहते हैं, तो हर कोई फिडलर ऑन द रूफ के बारे में सोचता है, लेकिन वास्तव में फरीसी परंपरा में बहुत विश्वास करते थे, मौखिक परंपरा जो आगे चलकर पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती थी। जब मूसा माउंट सिनाई पर चढ़ गया, तो मूसा को भगवान से कानून मिला और मूसा ने भगवान से पेंटाटेच और भगवान द्वारा लिखी गई दस आज्ञाएँ लिखीं। लेकिन जब मूसा पहाड़ पर चढ़ गया, तो उसे भगवान से यह सब मौखिक संचार भी मिला और मूल रूप से चालीस दिन और चालीस रातों तक उसने भगवान से बहुत कुछ सुना। तो फिर यह मौखिक परंपरा, कथित रूप से आगे चलकर फरीसियों

तक पहुँच गई। उन्होंने मौखिक परंपरा को स्वीकार कर लिया और यह उनके धर्म का एक बड़ा हिस्सा था। मौखिक परंपराएँ दो प्रकार की थीं। एक व्याख्यात्मक और दूसरी तार्किक रूप से निगमनात्मक। मैं इनमें से कुछ के बारे में बात करना चाहूँगा और इस अवधि और वास्तव में थोड़े बाद में सामने आए साहित्य के विभिन्न पहलुओं और प्रकारों के बारे में बात करना चाहूँगा; यानी इस समय अवधि का यहूदी साहित्य।

डी. यहूदी साहित्य: मिद्राश - हलाखाह और हगगदाह [9:43-11:28]

मैं व्याख्यात्मक से शुरू करना चाहूँगा। हम व्याख्यात्मक के बारे में बात करेंगे जो पवित्रशास्त्र की व्याख्या करता है, फिर हम तार्किक निष्कर्षों, धर्मशास्त्रीय निष्कर्षों के बारे में बात करेंगे जो पवित्रशास्त्र की व्याख्याओं से बनाए गए थे। पहला है मिद्रैश। मिद्रैश लगभग 200 ई. में आता है। यह पवित्रशास्त्र पर व्याख्यात्मक है, दूसरे शब्दों में, यह लगभग पवित्रशास्त्र पर एक टिप्पणी की तरह है, यह पवित्रशास्त्र की व्याख्या करता है; आपको एक पवित्रशास्त्रीय पाठ मिलता है और फिर इसे लगभग 200 ई. में मिद्रैश में व्याख्यायित किया जाता है। मिद्रैश द्वारा व्याख्यायित किए जाने के दो प्रकार हैं; एक को *हलाखा कहा जाता है*, *हलाखा* अधिक कानूनी रूप से उन्मुख है, इसलिए यह वकीलों द्वारा किए जाने वाले कामों जैसा है, जैसे पाठ यह कहता है और ये इसके तार्किक निहितार्थ हैं। आपका गधा एक गड्ढे में गिर जाता है, क्या आपको सब्त के दिन इसे बाहर निकालने की अनुमति है? और इसलिए यह *हलाखा है*, कानूनी खंड।

हगगदाह मुख्यतः कहानियों से बना है। *हगगदाह* वे कहानियाँ हैं जो रब्बी सुनाते थे, इसलिए ये ज़्यादा उपदेशात्मक, ज़्यादा कहानी के रूप में होंगी जहाँ *हलाखाह* शास्त्रियों की तरह ज़्यादा वैधानिक होगा। विस्तृत लोग *हलाखाह से काम करेंगे* और कहानियाँ सुनाने वाले रब्बी *हगगदाह होंगे*। तो ये दो तरह के साहित्य मिद्रैश में पाए जाते हैं।

ई. टार्गम्स [11:28-13:25]

अब मिद्रैश के बाद, यहूदियों के बीच करीबी पाठ कार्य का एक और पहलू टार्गम्स कहलाता है। टार्गम्स वास्तव में हिब्रू का अरामी अनुवाद है। तो मूल रूप से आपके पास हिब्रू था,

पुराने नियम का अधिकांश भाग हिब्रू में लिखा गया था लेकिन यीशु के समय के यहूदी लोग अरामी बोलते थे। यहाँ तक कि यीशु भी कई बार अरामी बोलते थे। " तालिथा कुम , "वह कहा करते थे और अन्य बातें जो यह संकेत देती थीं कि यीशु और उस समय के लोग अरामी भाषा जानते थे। यीशु शायद ग्रीक भी जानते थे और शायद हिब्रू भी जानते थे। वह शायद कम से कम द्विभाषी थे, शायद त्रिभाषी या चतुर्भाषी। जब भी आपके पास ऐसी संस्कृतियाँ होती हैं जहाँ कई चीज़ें एक साथ चल रही होती हैं तो लोग एक साथ कई भाषाएँ सीखते हैं। लेकिन यीशु की मातृभाषा शायद अरामी थी, और वह शायद ग्रीक भाषा से भी अच्छी तरह वाकिफ थे क्योंकि वह गलील से थे, अन्यजातियों की गलील। उनमें से ज़्यादातर ग्रीक बोलते थे। तो मूल रूप से, हिब्रू पुराने नियम का अरामी भाषा में अनुवाद किया गया क्योंकि अरामी लोगों की भाषा थी। जब वे 586 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर, दानियेल, शद्रक, मेशक, अबेदनगो और यहजेकेल के साथ बेबीलोन गए तो उन्होंने अरामी भाषा सीखी। ओनकेलोस और कई अन्य तार्गम्स। इन तार्गम्स को अरामी भाषा में लिखे गए पुराने नियम के रूप में पढ़ा जाएगा। इसलिए हमारे पास मिद्राश है, जो मूल रूप से पवित्रशास्त्र, कानूनी पहलुओं, कहानी पहलुओं पर टिप्पणी है और हमारे पास तार्गम्स हैं। तार्गम्स पवित्रशास्त्र के अरामी अनुवाद हैं, जो सेप्टुआजेंट के समान है जो पुराने नियम का एक ग्रीक अनुवाद था।

एफ. मिश्रा, तोसेफ्टा , और तल्मूड [13:26-16:11]

अन्य यहूदी परंपराओं में एक तार्किक खंड है। तार्किक खंड एक दस्तावेज पर केंद्रित है जो कि मिशनाह कहलाता है। मिशनाह मूल रूप से सिनाई में मौखिक परंपरा है जो पारित की गई थी और 200 ईस्वी के आसपास या उससे पहले की मान्यताओं को दर्शाती है। इसलिए यह मंदिर के पतन के समय के बाद, 70 ईस्वी में है। मिशनाह शुरू होता है और हम कहानियाँ सुनते हैं, रब्बियों और मिशनाह की चीजों के बीच आगे-पीछे बहस होती है।

यह मौखिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जो आगे चलकर आगे बढ़ी। इनमें से कुछ किंवदंतियाँ 70 ई. से भी पहले की हो सकती हैं। यीशु के समय को जानना बहुत मुश्किल है। इसलिए मिशनाह मौखिक परंपरा का एक प्रमुख हिस्सा है जो यीशु के समय से या 70 ई. में मंदिर के पतन के समय के बाद से लेकर लगभग 200 ई. तक चली आ रही है जब इसे लिखा गया था।

टोसेफ़्टा मूल रूप से मिश्राह के बाद का है; टोसेफ़्टा में मिश्राह पर टिप्पणियाँ हैं। तो आपके पास मिश्राह है, मूल दस्तावेज़, 200 ई. का जो संभवतः मंदिर के पतन के समय की परंपराओं का वर्णन करता है, और टोसेफ़्टा मिश्राह पर टिप्पणियाँ प्रस्तुत करता है।

तो यह बड़ा है: तल्मूड। तल्मूड के दो प्रकार हैं: बेबीलोनियन तल्मूड 400 ईस्वी के आसपास का है और जेरूसलम तल्मूड लगभग 600 ईस्वी का है। ये नए नियम के अध्ययन के लिए कम प्रासंगिक हैं लेकिन यदि आप यहूदी धर्म के बारे में कुछ भी पढ़ रहे हैं तो आपको तल्मूड के बारे में पता होना चाहिए। एक शेल्फ पर रखा तल्मूड लगभग इतना ही बड़ा है। इसका प्रत्येक खंड लगभग दो हजार पृष्ठों का है; यह बहुत बड़ा है। तल्मूड बड़े पैमाने पर मिशनाह का एक विस्तार है; इसलिए तल्मूड मौखिक परंपराओं को लेता है और उन पर विस्तार से चर्चा करता है। एक बेबीलोन में किया गया था और एक जेरूसलम में किया गया था, यह इन स्थानों पर स्थित है और उनके साथ पहचाना जाता है। वे दोनों विशाल हैं। बेबीलोनियन तल्मूड 400 ईस्वी का है और जेरूसलम तल्मूड 600 ईस्वी का है इसलिए मिशना शायद ईसाइयों के लिए सबसे उपयुक्त है, क्योंकि हम पहली सदी में मंदिर के पतन के बाद वहां क्या हो रहा था, यह जानने की कोशिश कर रहे हैं, यही वह समय है जब चर्च बढ़ रहा है। यह वह साहित्य है जो यहूदी धर्म को समझने के लिए पृष्ठभूमि की भूमिका निभाता है।

जी. अपोक्रीफा और कैनन [16:11-18:28]

बाइबल से इतर स्रोत हैं। इनमें से कुछ बाइबल से इतर स्रोतों के बारे में हमने इस कक्षा में बात की है। आपको वास्तव में 1 मैकाबीज़ पढ़ना होगा। मैकाबीज़ लगभग 165 ईसा पूर्व के थे, इसलिए यह वास्तव में ईसा के समय से पहले की बात है। आपके पास बेन सिराच की बुद्धि है, जो लोगों को नीतिवचन की पुस्तक की काफी याद दिलाती है। सुलैमान की बुद्धि भी है। इन्हें यहूदियों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है; यहूदी, जबकि उन्होंने इन पुस्तकों को रिकॉर्ड किया और उन्होंने इन पुस्तकों को पढ़ा, फिर भी अपोक्रीफा को ईश्वर का वचन नहीं मानते। वास्तव में हम यहूदियों से अपने पुराने नियम के कैनन को स्वीकार करते हैं; यहूदी अपोक्रीफा को स्वीकार नहीं करते, न ही हम। तो मूल रूप से यहीं से हमारे पुराने नियम के कैनन की उत्पत्ति होती है, यहूदी लोगों से। उनके

पास मूल रूप से कानून, भविष्यद्वक्ता और लेखन हैं। कानून पेंटाटेच होगा। भविष्यवक्ता यहोशू से शुरू होते हैं और शमूएल और राजाओं के माध्यम से पूर्ववर्ती भविष्यवक्ताओं के हिस्से के रूप में आगे बढ़ते हैं और फिर बाद के भविष्यवक्ता हमारे यशायाह, यिर्मयाह, यहजकेल और बारह होंगे, जो एक पुस्तक में होंगे - बारह छोटे भविष्यवक्ता। लेखन भजन, नीतिवचन, सभोपदेशक, अय्यूब, उस प्रकार की पुस्तकें होंगी। तो आपके पास व्यवस्था, भविष्यवक्ता, (पूर्व भविष्यवक्ता, बाद के भविष्यवक्ता) और फिर लेखन हैं। वे यहूदी कैनन के तीन खंड थे। उन्होंने अपोक्रीफा को स्वीकार नहीं किया। हालाँकि यह उनके इतिहास के बारे में था, लेकिन उन्होंने इसे ईश्वर के वचन के रूप में स्वीकार नहीं किया। वे दिलचस्प और अच्छी किताबें हैं। वास्तव में 16^{वीं} शताब्दी में, ट्रेंट की परिषद में, पहली बार अपोक्रीफा को वास्तव में एक चर्च परिषद द्वारा अनुमोदित किया गया था। इससे पहले उन्हें चर्च द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया था। ट्रेंट की परिषद पहली बार थी। इसलिए एक बड़ी बहस है। कैथोलिक लोग अपोक्रीफा को स्वीकार करते हैं, हम प्रोटेस्टेंट इसे स्वीकार नहीं करते हैं। यह पढ़ना दिलचस्प है, लेकिन इसे ईश्वर के वचन के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है। यहाँ तक कि 1 मैकाबीज़ की पुस्तक में भी कहा गया है कि आस-पास कोई पैगम्बर नहीं है और पैगम्बरों के बिना आपके पास धर्मग्रंथ नहीं हो सकता। लेकिन यहूदी हमें बड़े पैमाने पर पुराने नियम का कैनन देते हैं और वे अपोक्रीफा को विहित के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं।

एच. स्यूडेपिग्राफा : ... के सुसमाचार, ... के कार्य, ... के सर्वनाश। [18:28-22:45]

अब यहाँ कुछ रोचक पुस्तकें हैं। इन्हें स्यूडेपिग्राफा कहा जाता है। स्यूडेपिग्राफा आकर्षक है। वे तीन अलग-अलग खंडों में विभाजित हैं। सबसे पहले यह स्यूडेपिग्राफा है, इसलिए यह "छद्म" है, "छद्म" का अर्थ है झूठा। "एपिग्राफा" का अर्थ है "लेखन।" तो "स्यूडेपिग्राफा" ये झूठे लेखन हैं। कोई भी उन्हें प्रामाणिक नहीं मानता। प्रारंभिक चर्च युग में ऐसी पुस्तकें थीं जो तब चलन में थीं और हम उन्हें इन तीन श्रेणियों में विभाजित करते हैं। "सुसमाचार का..." है। लगभग चार या पाँच साल पहले, ईस्टर के समय, उन्होंने हमारे सामने यहूदा का सुसमाचार प्रस्तुत किया। यह बस, जैसा कि अमेरिका में हमेशा होता है, इन सांस्कृतिक युद्धों के साथ होता है, ठीक ईस्टर के समय, जब हम मसीह के पुनरुत्थान का जश्न मनाते हैं, तो वे यहूदा का सुसमाचार लेकर आते हैं जो ईसाई धर्म

को चुनौती देने वाला माना जाता है। मुझे लगा कि यह एक बड़ी चुनौती होगी, लेकिन सच्चाई यह है कि जब मैंने किताब उठाई और किताब का पहला पेज पढ़ा, तो यह स्पष्ट रूप से एक गूढ़ज्ञानवादी दस्तावेज़ था। गूढ़ज्ञानवादी दूसरी शताब्दी में 100 से 200 ई. तक थे और पहली शताब्दी में तो बिलकुल भी नहीं थे। तो यह स्पष्ट रूप से कुछ ऐसा है जो बहुत बाद में लिखा गया था; कम से कम मसीह के समय के सौ साल बाद और इसका बहुत कम महत्व था। लेकिन यहूदा का सुसमाचार एक बड़ा सुसमाचार है, पीटर का सुसमाचार, थॉमस का सुसमाचार, फिलिप का सुसमाचार, आप देख सकते हैं कि वे इन्हें कैसे कहते हैं, '... का सुसमाचार' और फिर वे एक प्रेरित का नाम देते हैं। तो आप इन पवित्र लेखों के बीच प्रारंभिक चर्च में संबंध देख सकते हैं। ये झूठे लेख थे और वे एक प्रेरित का नाम जोड़कर स्थिति हासिल करने की कोशिश कर रहे थे। तो आपके पास थॉमस का सुसमाचार है जो पढ़ने में काफी दिलचस्प है। आप यीशु के बारे में पढ़ सकते हैं जब वह बारह वर्ष का था और उसने अपने दोस्तों के साथ क्या-क्या किया और उन्हें विभिन्न चीजों में बदल दिया। वे यहाँ कुछ सुसमाचारों में पाए जाएँगे; पीटर का सुसमाचार, थॉमस का सुसमाचार, फिलिप।

पुस्तकों की एक और श्रेणी है "सर्वनाश का..." जॉन का सर्वनाश, जो रहस्योद्घाटन की पुस्तक है, जो हमारी बाइबिल में है। लेकिन इस समय अवधि के दौरान सर्वनाश की पुस्तकें थीं। सर्वनाश आपको दुनिया के अंत के बारे में बताता है कि दुनिया के नष्ट होने के साथ ही चीजें कैसे समाप्त होने जा रही हैं। यहाँ तक कि हमारी संस्कृति में भी हमारे पास "सर्वनाश अब" नामक एक फिल्म है और कैसे एक क्षुद्रग्रह दुनिया से टकराने और दुनिया को नष्ट करने के लिए आ रहा है, जो दुनिया के अंत को दर्शाता है। सर्वनाश उसी प्रकृति का है; इसलिए आपके पास पीटर का सर्वनाश, पॉल का सर्वनाश और थॉमस का सर्वनाश है। इसलिए आपके पास ये विभिन्न सर्वनाश हैं और इसलिए जॉन का सर्वनाश केवल एक ही नहीं है। यह उस समय अवधि से साहित्य की एक शैली थी। जॉन ने रहस्योद्घाटन की पुस्तक को व्यक्त करने के लिए उस प्रकार के साहित्य का उपयोग किया। लेकिन यहाँ अन्य भी हैं, फिर से कोई भी इन्हें ईश्वर का वचन नहीं मानता है लेकिन वे दिलचस्प हैं। हमारे पास दस्तावेज़ हैं, वास्तव में मेरे कार्यालय में दो पुस्तकें हैं जो लगभग डेढ़ इंच मोटी हैं, जिनमें वे सभी नए नियम के दस्तावेज़ हैं जो इस अवधि से आते हैं लेकिन उन्हें धर्मग्रंथ का हिस्सा नहीं माना जाता है।

तो आपके पास 'यहूदा, थॉमस के सुसमाचार' और 'पीटर, पॉल और थॉमस के सर्वनाश' हैं, और फिर आपके पास 'कार्यों के कार्य' हैं और हमारे मामले में, नए नियम में, हमारे पास प्रेरितों के कार्य, प्रेरितों के कार्य की पुस्तक है, जो ल्यूक द्वारा लिखी गई है, जो शुरुआती चर्च और पॉल की तीन मिशनरी यात्राओं, कैद और फिर रोम जाने के बारे में लिखी गई है। यहाँ हमारे पास पीटर के कार्य, एंड्रयू के कार्य, पॉल के कार्य, जॉन के कार्य और थॉमस के कार्य हैं। तो ऐसा लगता है कि थॉमस इन सभी शैलियों में आता है; लेकिन थॉमस के कार्य, जॉन के कार्य आपको इनमें से कुछ पृष्ठभूमि की कहानियाँ बताते हैं। वे आकर्षक पुस्तकें हैं, हमारे पास वे हैं, उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। ईमानदारी से कहें तो, वे नए नियम के अध्ययन के लिए उतने उपयोगी नहीं हैं, वे आपको केवल संस्कृति का स्वाद देते हैं और उस समय किस प्रकार के विचारों पर चर्चा की जा रही थी। आमतौर पर इनमें से अधिकांश मसीह के समय के बाद के हैं, उनमें से कुछ एक सौ, दो सौ साल बाद के हैं। अतः उनमें से कुछ प्रासंगिक हैं, तथा कुछ उतने प्रासंगिक नहीं हैं।

I. रब्बिनिक विचार पद्धति: मत्ती 23:24-25 [22:45-28:06]

C. फरीसी और सद्दुकी

[लघु वीडियो: संयुक्त आईएल; 22:45-35:43]

यहाँ कुछ रब्बीनी तरीकों के बारे में कुछ उदाहरण दिए गए हैं। मत्ती अध्याय 23, श्लोक 25 और 26 में, मैं आपको इसे पढ़कर सुनाता हूँ; इसमें कहा गया है, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय!" (और आपको याद होगा कि मत्ती 23 में यीशु ने फरीसियों की बहुत निंदा की है) "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय, तुम कप और थाली को बाहर से तो साफ करते हो, परन्तु भीतर वे लोभ और भोग-विलास से भरे हुए हैं। पहले प्याले और थाली को भीतर से साफ करो, ताकि बाहर से भी साफ हो जाए।" और इसलिए आपके पास कप के भीतर और बाहर के बीच यह बहस है। और यीशु कह रहे हैं कि आप कप के बाहर को साफ करने में इतना समय लगाते हैं, लेकिन अंदर कॉफी के दाने या कुछ और भरा हुआ है। वहाँ बहुत सारी बुरी चीजें हैं। यीशु कहते हैं कि आपको कप के भीतरी हिस्से को साफ करने की जरूरत है, कप के भीतरी हिस्से को बाहर से ज्यादा साफ करने की जरूरत है। और इसलिए यह अंदर / बाहर की बात है, कप की

बहस। यह बहुत दिलचस्प है कि आपके पास कुछ शुरुआती रब्बी हैं जो एक ही बात पर बहस कर रहे हैं। इसलिए शम्माई मूल रूप से तर्क देते हैं कि बाहरी हिस्सा तब भी साफ है जब भीतरी हिस्सा अशुद्ध हो; कप के बाहरी हिस्से को साफ माना जा सकता है, इसलिए जब आप इसे छूते हैं तो आप खुद को अशुद्ध नहीं करते क्योंकि कप का बाहरी हिस्सा साफ है। अगर अंदर से अशुद्ध है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, बस जब तक बाहरी हिस्सा साफ है। शम्माई की स्थिति यही थी; शम्माई महान रब्बियों में से एक थे। मूल रूप से शुरुआती दौर के चार महान रब्बी हैं - हिलेल एक है, शम्माई दूसरा है, गमलिएल - क्या किसी को गमलिएल याद है? पॉल ने गमलिएल के अधीन अध्ययन किया। वास्तव में प्रेरितों की पुस्तक में गमलिएल लगभग ईसाइयों की ओर से बोलते हैं और कहते हैं कि यह भगवान की ओर से हो सकता है और हमें इसकी जांच करने की आवश्यकता है; और फिर रब्बी अकीबा। और इसलिए चार महान रब्बी, शम्माई, हिलेल, गमलिएल और अकीबा। शम्माई ने कहा कि कप का बाहरी हिस्सा महत्वपूर्ण है अगर वह साफ है, अंदर का हिस्सा उतना फर्क नहीं पड़ता। दूसरी ओर, हिलेल ने विपरीत स्थिति ली, और कहा, नहीं कप का अंदरूनी हिस्सा मायने रखता है; कप का अंदरूनी हिस्सा ही मायने रखता है और बाहरी हिस्सा हमेशा अशुद्ध होता है, कप का अंदरूनी हिस्सा ही मायने रखता है। तो जैसा कि यह पता चलता है कि यीशु ने कप के अंदरूनी हिस्से के बारे में जो कहा वह महत्वपूर्ण है और इसे साफ करने की आवश्यकता है, वह हिलेल द्वारा कही गई बातों से बहुत मिलता-जुलता है। तो आपको यीशु और हिलेल के बीच यह संबंध मिलता है, यह सिर्फ दिलचस्प है, दोनों के बीच संबंध।

मैं प्रभु की प्रार्थना को यहां रखना चाहता हूं; प्रभु की प्रार्थना और वाक्यांशों में से बहुत सी बातें, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है," और इस प्रकार की बातें, उस वाक्यांशों का अधिकांश भाग रब्बियों में पाया जाता है।

मत्ती 7 पद 4 में लिखा है, "हे कपटी! पहले अपनी आंख से लट्ठा निकाल, तब तू अपने भाई की आंख से तिनका निकालने के लिए भली भांति देख सकेगा।" यीशु कहते हैं, "जब तेरी अपनी आंख में लट्ठा हो, तो अपने भाई की आंख से तिनका मत निकालना।" यह बहुत दिलचस्प है कि रब्बी टार्फन यह कहते हैं, "मुझे आश्चर्य है कि क्या इस पीढ़ी में कोई जानता है कि फटकार को कैसे स्वीकार किया जाए, अगर कोई उससे कहता है, 'अपनी आंखों के बीच से तिनका निकालो,' तो वह

जवाब देता है, 'अपनी आंखों के बीच से लट्ठा निकालो।' और इसलिए रब्बी टार्फन कुछ कह रहे हैं, बिल्कुल वही बात नहीं जो यीशु कह रहे हैं, लेकिन यह दिलचस्प समानांतर वाक्यांश है। आँख में तिनके और आँख में लट्ठे के बीच का अंतर यीशु ने जो कहा था, उसके समानांतर है।

दूसरी बात यह भी है कि यीशु ने दृष्टांतों में शिक्षा दी। आप पाएंगे कि स्पूडेपिग्राफा या डेड सी स्कॉल में दृष्टांत बहुत ज़्यादा नहीं थे। लेकिन रब्बियों में दृष्टांत बहुत ज़्यादा थे। मिडराश में आपको ये दृष्टांत मिलेंगे; यीशु दृष्टांतों में शिक्षा देते हैं, बीजों का दृष्टांत, कुछ बीज सड़क के किनारे गिरे, कुछ अच्छी ज़मीन पर गिरे, कुछ कंटीली ज़मीन पर गिरे। बीज और खरपतवार का दृष्टांत है, मालिक ने अच्छी फ़सल बोई, कुछ दुश्मन आए और उन्होंने उसके साथ खराब फ़सल बोई और उन्होंने कहा कि फ़सल आने तक इसे बढ़ने दो। तो आपको यीशु और दृष्टांत मिलते हैं; अच्छे सामरी का दृष्टांत, आदि। रब्बियों ने भी दृष्टांतों में शिक्षा दी। मूल रूप से, मैं यहाँ जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि यीशु यहूदी हैं। वह शिक्षा देते हैं और वास्तव में, जब लोग यीशु के पास आते हैं तो अक्सर उन्हें "रब्बी" कहते हैं। यीशु यहूदी हैं, वे दृष्टांतों में शिक्षा देते हैं, वे अपने समय के यहूदी लोगों की छवियों, वाक्यांशों का उपयोग करते हैं। इसलिए यीशु यहूदी हैं और मैं बस उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले उनके साहित्य और प्रस्तुतियों की शैलियों के साथ इन संबंधों को जोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ।

जे. यहूदी संप्रदाय: फरीसी [28:06-30:14]

अब हम अपने यहूदी संप्रदायों को नए नियम में लागू करते हुए फरीसियों के साथ आगे बढ़ते हैं, आपके पास पॉल या शाऊल हैं। इस्राएल का पहला राजा कौन था? - इस्राएल का पहला राजा शाऊल था, राजा शाऊल किस जनजाति से था? वह भी बेंजामिन के गोत्र से था। तो शाऊल, जो पॉल की ओर मुड़ता है, वह भी बेंजामिन के गोत्र से था, जिसका नाम शायद राजा शाऊल के नाम पर रखा गया था। फिर उसे एक नया नाम मिलता है, पॉल। पॉल ने गमलिएल के अधीन अध्ययन किया; गमलिएल उस समय एक बहुत प्रसिद्ध यहूदी रब्बी था। आज भी यहूदी लोग जानते हैं कि गमलिएल कौन है, हिल्लेल, शम्मई, अकीबा और गमलिएल तक। नीकुदेमुस रात में यीशु के पास आता है, यूहन्ना अध्याय 3 और वह यीशु को संबोधित करता है और यीशु उसे सिखाते हैं।

नीकुदेमुस भी एक फरीसी है। और पॉल ने फिलिप्पियों 3:6 में कहा कि वह [पॉल] फरीसियों का फरीसी था, और इसलिए पॉल ने यहूदी धर्म में अपनी पृष्ठभूमि के बारे में थोड़ा सा बताया और उसने कहा कि वह यहूदी धर्म में सभी से बेहतर था। जाहिर है, पॉल बहुत ही गंभीर था। इसलिए फरीसियों, यह जानना एक अच्छी बात है जब आप नए नियम में पढ़ते हैं, 'हे फरीसियों, कपटियों, शास्त्रियों पर हाय!' जब भी आप किसी को फरीसी कहते हैं तो इसका मतलब आमतौर पर यह होता है कि कोई व्यक्ति धर्म के बारे में सोचने के तरीके में कानूनवादी और अदूरदर्शी है। वे फरीसी हैं। जब हम "फरीसी" शब्द सुनते हैं तो हमारा दिमाग गलत दिशा में चला जाता है। उस समय फरीसी का सम्मान किया जाता था। फरीसी उस समय धार्मिक नेताओं के रूप में सम्मानित थे। इसलिए आपको उस तरह का बदलाव करना होगा। फरीसी आमतौर पर अमीर नहीं थे, वे आमतौर पर गरीब यात्रा करने वाले शिक्षक और प्रचारक थे।

के. सद्कियों [30:14-32:28]

इसके विपरीत, सद्कियों का सम्मान नहीं किया जाता था और ये लोग धनी थे। फरीसी गरीब थे लेकिन अधिक धार्मिक थे और इसलिए आम लोगों द्वारा अधिक सम्मानित थे। आम लोग फरीसी का सम्मान करते थे, जबकि सद्की धनी थे। हम बस उनके दृष्टिकोण और जीवन के बीच अंतर करना चाहते हैं, जिसके बारे में हमने पहले बात की थी। फरीसी, जब मैकाबीन काल में सिकंदर और उसके चार सेनापतियों से हेलेनिज्म आया, जब ग्रीक संस्कृति आई तो फरीसी अपनी परंपराओं को और अधिक मजबूती से पकड़े रहे; लोगों ने उनका सम्मान किया क्योंकि वे मूल रूप से यहूदी थे और उन्होंने अपनी यहूदीता को बनाए रखा। उन्होंने खुद को हेलेनिस्टिक ग्रीक संस्कृति और वहां हो रही धर्मनिरपेक्षता से अलग कर लिया। इसके विपरीत, सद्कियों ने यूनानियों का खुले दिल से स्वागत किया। सद्कियों ने आत्मसात किया। सद्कियों ने आत्मसात करने में बहुत अधिक रुचि दिखाई, जबकि फरीसी पीछे हट गए और अपनी परंपरा पर दोगुना जोर दिया। दरअसल, सद्की उच्च वर्ग से आते हैं और उन्होंने ग्रीक संस्कृति को आत्मसात कर लिया, इसलिए वे आर्थिक और व्यावसायिक रूप से आगे बढ़े। साथ ही, सद्कियों ने उच्च पुरोहिती पर भी कब्ज़ा कर लिया। इसलिए जब हम नए नियम में प्रवेश करते हैं, तो हम कैफा को उच्च पुजारी के रूप में देखते हैं; यह

कैफा एक सद्दकी और यहूदी परिषद होने जा रहा है, उनमें से कई सद्दकियों, उच्च वर्ग, कुलीन, उच्च वर्ग के लोग होंगे। हालाँकि, वे आम जनता के बीच अलोकप्रिय हैं क्योंकि उनके पास धन और शक्ति है और वे हेलेनिस्टिक संस्कृति में आत्मसात हो गए हैं। नीचे के कई लोग जो अभी भी धार्मिक हैं और अभी भी यहूदी धर्म का सम्मान करते हैं, वे सद्दकियों की सराहना नहीं करते।

एल. सद्दकियों की मान्यताएँ: कोई परंपरा, पुनरुत्थान या स्वर्गदूत नहीं [32:28- 35:43]

तीन ऐसी बातें थीं जिन पर सद्दकियों को विश्वास नहीं था। पहली बात तो मौखिक परंपरा है। सद्दकियों ने मौखिक परंपरा को स्वीकार नहीं किया। मौखिक परंपरा फरीसियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी; और मिशना जैसी चीजें फरीसियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण थीं। बेशक, मिशना को अगले कुछ सौ सालों तक नहीं लिखा जाएगा। मौखिक परंपरा को आगे बढ़ाने का विचार फरीसियों के धर्मशास्त्र का केंद्र था; जबकि सद्दकियों ने मौखिक परंपरा को अस्वीकार कर दिया।

सद्दकियों ने भी शारीरिक पुनरुत्थान में विश्वास नहीं किया। कुछ मायनों में, उन्होंने सोचने के यूनानी तरीकों को ज़्यादा अपनाया। यूनानी सोच में, एक द्वैतवाद ज़्यादा है जहाँ मूल रूप से आपके पास आध्यात्मिक और भौतिक दोनों हैं, और यूनानी संस्कृति में, भौतिक को कम महत्व दिया जाता है और आध्यात्मिक को उच्च स्थान दिया जाता है। मूल रूप से आपके पास भौतिक और आध्यात्मिक के बीच यह द्वैतवाद है। यूनानियों के लिए आध्यात्मिक की प्रशंसा की जाती है और भौतिक को कमतर या नीचा दिखाया जाता है। इसलिए आप पुनरुत्थान शरीर नहीं चाहते क्योंकि शरीर बुरा है क्योंकि शरीर भौतिक है। आप चाहते हैं कि यह आध्यात्मिक हो। प्लेटो और गुफा की तरह, अगर आपको याद हो, तो आप जानते हैं कि ये सार्वभौमिक रूप कहाँ हैं। इसलिए सद्दकियों ने पुनरुत्थान को नहीं माना।

वे स्वर्गदूतों को नहीं मानते थे, वे यह नहीं मानते थे कि आध्यात्मिक प्राणी हैं। वे यह भी नहीं मानते थे कि स्वर्गदूत भी हैं, इसलिए पुनरुत्थान या स्वर्गदूत नहीं हैं। विडंबना यह है कि यदि आप यीशु के साथ इस पर चर्चा करते हैं, तो मैथ्यू 22, मैथ्यू 23 में, सद्दकी, जो कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं है, यीशु के पास आते हैं और कहते हैं, अब आप इस समस्या के साथ क्या करते हैं? समस्या यह है कि एक महिला का पति है, उसके कोई बच्चे नहीं हैं और पति मर जाता है। खैर, प्राचीन में जो

आवश्यक है, रूथ की पुस्तक और पुराने नियम के कानूनी ग्रंथों में अन्य स्थानों से लेविरेट विवाह, भाई को महिला से विवाह करना चाहिए, इसलिए भाई उससे विवाह करता है, और वह भी मर जाता है। उसका एक और भाई है, अंत में सभी सात भाई महिला से विवाह करते हैं और फिर वह भी मर जाती है; "तो पुनरुत्थान में, वह किसकी पत्नी होगी?" सद्दूकी यीशु को यह पहेली दे रहे हैं ताकि मूल रूप से उन्हें यह कहने के लिए मजबूर किया जा सके कि "यीशु, कोई पुनरुत्थान नहीं है; यह साबित करता है कि पुनरुत्थान नहीं हो सकता है।" फिर यीशु ने, शानदार ढंग से, आप यहाँ विडंबना देख सकते हैं, सद्दूकियों को जवाब दिया, "तुम शास्त्रों या ईश्वर की शक्ति को नहीं जानते।" और यीशु ने कहा, "पुनरुत्थान में वे स्वर्गदूतों की तरह होंगे।" अब क्या आपको यहाँ विडंबना समझ में आई? सद्दूकियों को भी स्वर्गदूतों पर विश्वास नहीं है; और फिर यीशु ने यह कहकर उनका खंडन किया कि "पुनरुत्थान में वे स्वर्गदूतों की तरह होंगे, जो न तो विवाहित हैं और न ही विवाहित हैं।" ताकि जब आप दूसरी दुनिया में जाएँ, तो वहाँ कोई विवाह न हो। आप स्वर्गदूतों की तरह होंगे। इसलिए वह एक क्षेत्र में उनकी खामियों का उपयोग दूसरे में उनका खंडन करने के लिए करता है, और आप इसे देख सकते हैं। इसलिए वह सद्दूकियों के साथ समस्या से बाहर निकल जाता है। तो ये सद्दूकियाँ हैं। जॉन हिरकेनस के साथ वहाँ बड़ा संघर्ष याद रखें जहाँ उसने फरीसियों को सूली पर चढ़ाया था और दोनों के बीच बड़ा तनाव था।

एम. एसेनेस [35:43- 36:56]

डी. एस्सेन्स, ज़ीलॉट्स, समरिटन्स

[लघु वीडियो: कम्बाइन एमपी; 35:43-46:51]

अब अगला समूह जिस पर हम संक्षेप में नज़र डालना चाहते हैं, वह है एसेन। एसेन, या, मैं अभी न्यूयॉर्क में डेड सी स्कॉल के बारे में एक प्रदर्शनी के लिए गया था, जहाँ उन्हें [यहाद], “एक,” “समूह,” इस तरह की चीज़, “समुदाय” कहा जाता था। समुदाय इसे कहने का एक तरीका होगा। एसेन मूल रूप से एक समूह था - फरीसी, जब हेलेनिस्ट आए, तो उन्होंने अपनी परंपराओं को बनाए रखा, सद्दूकियों ने कहा, “हम तुम्हारे साथ, यूनानियों के साथ आत्मसात करेंगे,” एसेनियों ने कहा, “फरीसी उनके लिए ‘उदार’ भी हैं।” फरीसियों ने उच्च पुरोहिती में हसमोनियन शासकों को

स्वीकार किया, और एसेन समुदाय ने कहा, “नहीं, नहीं उच्च पुरोहिती को सादोक पुजारियों, सादोकियन पुजारियों द्वारा चलाया जाना चाहिए जो डेविड के समय से चले आ रहे हैं।” इसलिए एसेन समुदाय ने मूल रूप से यरूशलेम से अपना नाम वापस ले लिया और कहा कि यरूशलेम में पूरी पूजा भ्रष्ट थी, फरीसी और सद्दूकी दोनों, और हम उनमें से किसी को भी स्वीकार नहीं कर सकते। वे चले गए और रेगिस्तान में मृत सागर के पास चले गए और वहाँ एक समुदाय बना लिया। उस जगह को कुमरान कहा जाता था जहाँ डीएसएस, मृत सागर स्कॉल पाए गए थे।

एन. मृत सागर स्कॉल [36:56-39:41]

मृत सागर स्कॉल लगभग 1948 में एक बेडौइन लड़के द्वारा पाया गया था जो मृत सागर क्षेत्र में गुफाओं में खेल रहा था; उसने एक चट्टान को गुफा में फेंका और एक खनक की आवाज सुनी, उसने कहा, "वहाँ कुछ है," इसलिए वह वहाँ गया और बाहर निकाला जो मृत सागर स्कॉल निकला। तो आपको वहाँ गुफाएँ मिलेंगी और यदि आप कभी मृत सागर स्कॉल देखते हैं तो वे इसे 1Q, 2Q, 3Q, 4Q के रूप में वर्णित करेंगे; "4Q" का अर्थ होगा "कुमरान में गुफा 4" - इसलिए वे इसे इस तरह से बनाते हैं। वे आपको बताते हैं कि यह किस गुफा में है, गुफा 6 या गुफा 11 क्यू - जो कि कुमरान है, और फिर हबक्कूक या भजन या ऐसा कुछ। तो एसेन ने मृत सागर स्कॉल का उत्पादन किया।

उन्होंने जो किया, वह एक बदलाव था। वे हसमोनियन पुजारी नहीं चाहते थे, हसमोनियन पुजारी मैकाबीज़ के पास वापस चले गए। उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया, वे ज़ादोक पुजारी चाहते थे। और इसलिए मूल रूप से यह मंदिर उनकी मान्यताओं में विभाजित हो गया, उन्होंने "टोरा" को "मंदिर" पर ले लिया। उन्होंने मंदिर से बाहर निकलकर वहाँ जाकर शास्त्रों की नकल की; उन्होंने टोरा की नकल की।

तो फिर इन धर्मग्रंथों को जार में डाल दिया गया, इन जार को गुफाओं में डाल दिया गया और 1948 में इस बेडौइन लड़के को मृत सागर स्कॉल मिले। यह शायद 20^{वीं} सदी की सबसे बड़ी खोजों में से एक है। इसने हिब्रू के हमारे ज्ञान को लगभग एक हजार साल पीछे पहुंचा दिया। हिब्रू के बारे में हमारा ज्ञान, हमारी सबसे अच्छी पांडुलिपियाँ लगभग 800 से 1000 ई. के आसपास थीं और

फिर मूल रूप से मृत सागर स्कॉल के साथ हम 100 ई. से पहले या उससे भी पहले वापस चले गए; लगभग एक हजार साल की छलांग। यह सिर्फ यह दर्शाता है कि उन हजार सालों में पांडुलिपियों को कितनी अच्छी तरह से संरक्षित किया गया था। वे शास्त्री थे। कुछ लोग कहते हैं कि एस्सेन समुदाय मठवासी था। उन्होंने कब्रिस्तान में कुछ खुदाई की है, कब्रिस्तान आपको बताएगा कि वास्तव में वहाँ कौन रहता था। पता चला कि वहाँ कुछ महिलाएँ थीं, मुझे इसके बारे में बहुत कुछ पता नहीं है, लेकिन इस पर एक बड़ा विवाद है। उन्हें मठवासी माना जाता था, लेकिन फिर उन्होंने कब्रों में इन महिलाओं को पाया, इसलिए मृत सागर स्कॉल के साथ नीचे इन शास्त्रियों के साथ कुछ चल रहा होगा। हम इन लोगों के आभारी हैं। उनके पास बहुत सारे बपतिस्मा और धोने के लिए जगहें थीं, और स्वच्छता के बारे में बहुत चिंता थी। तो ये एसेन थे और वे इतने सख्त थे कि उन्होंने फरीसियों को भी अस्वीकार कर दिया। हम उनके बहुत आभारी हैं क्योंकि उन्होंने पवित्रशास्त्र का इतना हिस्सा संरक्षित किया।

ओ. ज़ीलॉट्स [39:41- 40:36]

अब, दूसरा समूह ज़ीलॉट्स होगा। हमने पहले उल्लेख किया था कि संभवतः पॉल को ज़ीलॉट माना जाता था; डॉ. डेव मैथ्यूसन के अनुसार, ज़ीलॉट्स ज़ीलॉट्स की प्रवृत्ति वाला एक फरीसी था। ज़ीलॉट्स चाहते थे कि ईश्वर का राज्य एक राजनीतिक सैन्य चीज़ के रूप में आए। इसलिए जब रोम आया और यीशु के समय में हावी हो गया, तो ज़ीलॉट्स रोमन सरकार को उखाड़ फेंकना चाहते थे। वे रोम को इज़राइल से बाहर निकालना चाहते थे ताकि इज़राइल शासन कर सके और राज्य आ सके। वे इसे सैन्य और बहुत शारीरिक रूप से करना चाहते थे। इसलिए इन लोगों को ज़ीलॉट्स कहा जाता था। कुछ मायनों में, वे पहली सदी के आतंकवादी समूह की तरह थे, क्योंकि जब आप किसी रोमन को मारते हैं, तो यह अच्छा होता है। वे हिंसा करने के लिए प्रवृत्त होते थे। इसलिए यह ज़ीलॉट्स के साथ एक राजनीतिक और सैन्य चीज़ थी जहाँ तक रोम के प्रति उनका विरोध हावी था।

पी. समरिटन्स [40:36-46:51]

सामरी एक दिलचस्प समूह है। सामरी कहाँ से आए? सामरी नए नियम के साथ कैसे जुड़ते हैं? दो सबसे प्रसिद्ध अंश जो हर कोई जानता है वे हैं अच्छे सामरी का दृष्टांत। यरूशलेम से नीचे जाते समय आदमी को पीटा जाता है। एक लेवी दूसरी तरफ से गुजरता है, दूसरा व्यक्ति भी गुजर जाता है। अंततः, एक अच्छा सामरी है जो करुणामय है और उस आदमी का ख्याल रखता है; अच्छा सामरी। फिर से यह एक वास्तविक टकराव होगा क्योंकि यहूदी सामरियों से नफरत करते थे और सामरी यहूदियों से नफरत करते थे। सामरी कहाँ से आए? खैर, सबसे पहले, 721 या 2 ईसा पूर्व में, अश्शूरियों ने नीचे आकर उत्तर में सामरिया को हराया। तो मूल रूप से शाऊल, डेविड और सुलैमान के अधीन उत्तरी राज्य, आपको याद होगा उनके अधीन राज्य एकजुट था। सुलैमान के बाद 'बोआम' भाइयों और राज्य का विभाजन लगभग 931 ईसा पूर्व में हुआ। तब जो हुआ वह यह था कि उत्तरी राज्य कई सौ वर्षों तक सुनहरे बछड़ों के पीछे चला गया। फिर उत्तरी राज्य 931 से 722 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में रहा, मेरा अनुमान है कि यह कुछ सौ साल है। अश्शूरियों ने लगभग 721 ईसा पूर्व में आकर सामरिया को बाहर निकाल दिया। उन्होंने सभी बुद्धिजीवियों, सभी अमीर लोगों को खदेड़ दिया; सभी प्रतिष्ठित लोगों को अश्शूरियों ने ले लिया और सारी जमीन छोड़ दी। उत्तरी राज्य को खदेड़ दिया गया और पूरी दुनिया में बिखेर दिया गया। वैसे, प्रवासी वे यहूदी हैं जो 722 ईसा पूर्व के बाद पूरी दुनिया में बिखरे हुए हैं। यहूदी आज भी 721 ईसा पूर्व से लेकर आज तक बिखरे हुए हैं। हालाँकि उनमें से कई अब वापस इज़राइल चले गए हैं, वास्तव में, न्यूयॉर्क शहर में इज़राइल देश से ज़्यादा यहूदी हैं अश्शूरियों ने उत्तरी राज्य से सभी उच्च कोटि के लोगों को निकाल लिया और वे अन्य क्षेत्रों से भी लोगों को लाये और उन्हें मिलाया और उन्हें गरीब यहूदियों के साथ विवाह करवाया। इसलिए इन गरीब यहूदियों को अन्यजातियों के साथ विवाह करना पड़ा और इसलिए इस अंतर्विवाह के कारण सामरियों को आधी नस्ल का माना जाता था। अश्शूरियों ने इन अन्य समूहों को लाया और इन अन्यजातियों के समूहों और उत्तरी राज्य के बीच अंतर्विवाह हुआ। उन्हें आधी नस्ल का माना जाता था। सामरियों ने माउंट गेरिजिम के शीर्ष पर एक मंदिर बनाया; माउंट गेरिजिम वह स्थान था जहाँ यहोशू के समय से आशीर्वाद और शाप दिया जाता था। शेकेम घाटी में है और उत्तर में माउंट एबाल और दक्षिण में माउंट गेरिजिम, दोनों बड़े सुंदर पहाड़ हैं। सामरियों ने माउंट गेरिजिम के शीर्ष पर एक मंदिर बनाया जबकि यहूदी मंदिर यरूशलेम में नीचे

है। तो अब आपको माउंट गेरिज़िम पर सामरी मंदिर और माउंट सिथ्योन पर यरूशलेम मंदिर के बीच यह संघर्ष मिल गया है। धर्म के बीच यह संघर्ष है, न केवल यहूदी जातीयता के आधे-नस्ल और पूर्ण-नस्ल के बीच बल्कि मंदिरों का संघर्ष भी है। 110 ईसा पूर्व या उसके आसपास जॉन हिरकेनस ने सामरी के मंदिर को जला दिया। इसलिए सामरी, यहूदियों ने उनके मंदिर को जला दिया। इसलिए सामरी लोगों को यहूदियों और उनके वर्चस्व के साथ वास्तविक समस्या है और उनके मंदिर को नष्ट कर दिया है। मैं माउंट गेरिज़िम पर गया हूँ; आज लगभग 400 सामरी हैं जो माउंट गेरिज़िम के शीर्ष पर रहते हैं। वे पूरे पुराने नियम को स्वीकार नहीं करते हैं, वे केवल पेंटाटेच को स्वीकार करते हैं। परिणामस्वरूप, वैसे, यदि आप ईस्टर के आसपास वहाँ जाते हैं, तो यह अब जाने के लिए एक बहुत ही खतरनाक जगह है क्योंकि इज़राइल में जो कुछ हो रहा है। सामरी फसह मनाते हैं। वे वास्तव में मेमने, फसह के मेमने को मारते हैं, और आप ऊपर जाकर उस जगह को देख सकते हैं, जो कि, मुझे नहीं पता, इस कमरे जितना बड़ा है और उनके पास ऐसी चीज़ें हैं जो मेमने को फैलाती हैं और वे मेमने का गला काटते हैं और मेमने का खून लेते हैं और फसह की सेवा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे निर्गमन अध्याय 12 में फसह की सेवा की गई थी। इसलिए सामरी लोग आज भी ऐसा करते हैं। समस्या यह है कि इनमें से 400 से ज़्यादा लोग हैं और उन्होंने आपस में विवाह किया है, आपस में विवाह किया है, और आपस में विवाह किया है और जब आप आपस में विवाह करते हैं, आपस में विवाह करते हैं... और आपके चचेरे भाई और आपके दूसरे चचेरे भाई से। इनमें से कुछ चीज़ों ने बहुत नुकसान पहुँचाया है। जब हम वहाँ गए तो सामरियों के महायाजक हमारा स्वागत करने के लिए बाहर आए। महायाजक अपने सभी शाही वस्त्र और अपनी पूरी गरिमा के साथ बाहर आए और उनके पीछे उनके लोग आए और वे हमारा स्वागत करने के लिए बाहर आए और गेरिज़िम पर्वत पर हमारा स्वागत किया। फिर हम मंदिर के ऊपर चढ़ने के लिए आगे बढ़े। हम मंदिर में पहुँच गए। वहाँ एक मंच है जहाँ मंदिर था, जब तक कि थोड़ी देर बाद उन्होंने हमें वहाँ से नहीं निकाला। माउंट गेरिज़िम के शीर्ष से शेकेम और एबाल को देखते हुए कुछ सुंदर तस्वीरें हैं। सामरी लोग आज भी माउंट गेरिज़िम पर हैं; वहाँ लगभग 400 लोग हैं। सामरी पेंटाटेच आज भी बहुत प्रसिद्ध है।

इसलिए यीशु अच्छे सामरी का दृष्टांत करेंगे, यीशु जॉन की पुस्तक, अध्याय 4 में कुएँ पर सामरी महिला से भी बात करेंगे। वह कुएँ पर महिला से बात करेंगे और यह महिला शेकेम वापस जाएगी और अपने लोगों, सामरियों से बात करेगी। इसलिए यीशु सामरिया से गुज़रे और उनसे बात की। लेकिन यहूदियों और सामरियों के बीच यह तनाव होगा। यहूदी सामरियों को आधी नस्ल और वास्तव में घृणित, सबसे नीच के रूप में देखते हैं। सामरी यहूदियों से नफरत करते हैं क्योंकि यहूदियों ने उन पर हावी होकर उनके मंदिर को नष्ट कर दिया। तो एक "दो मंदिरों की कहानी।" जॉन हिरकेनस, जैसा कि हमने कहा, लगभग 110 ईसा पूर्व सामरी मंदिर को नष्ट कर दिया

प्रश्न: प्रवासी समुदाय और सभास्थल [46:51-48:57]

ई. सभास्थल और संहेद्रिन

[लघु वीडियो: संयुक्त क्यूटी; 46:51-59:33]

यह एक ऐसा शब्द है जिसका मैंने पहले भी इस्तेमाल किया है, इसे "प्रवासी" कहा जाता है। प्रवासी वे यहूदी हैं जो दुनिया भर में फैले हुए हैं, और वे आज भी बिखरे हुए हैं। लेकिन यहूदियों के इस प्रवासी, बिखराव ने कुछ ऐसी चीजों को जन्म दिया है जो न्यू टेस्टामेंट के अध्ययन के संदर्भ में वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। जो हुआ वह यह है कि शुरुआती यहूदी धर्म और यीशु के समय में आपके पास मंदिर था और सब कुछ मूल रूप से मंदिर के इर्द-गिर्द केंद्रित था। आपके पास उच्च पुरोहिती, और पुजारी और शास्त्री थे और मंदिर ही केंद्र बिंदु था। लेकिन 70 ईस्वी के बाद रोमनों ने मंदिर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और इसे पूरी तरह से गिरा दिया, पूरी तरह से गिरा दिया। चट्टान पर चट्टान गिरा दी गई; मंदिर 70 ईस्वी में पूरी तरह से नष्ट हो गया। फिर जो हुआ वह प्रवासी था, यहूदी दुनिया भर में बिखरे हुए थे, 721 ईसा पूर्व से जब अशूरियों ने उन्हें तितर-बितर किया और फिर जब बेबीलोन के लोग आए और दानियेल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, यहजेकेल और अन्य लोगों को ले गए। यहूदियों ने ये आराधनालय बनाए। और जिन सभास्थलों में वे बिखरे हुए थे, अगर उनके पास दस पुरुष होते तो वे इन सभास्थलों का निर्माण कर सकते थे। सभास्थल की संरचना आज भी बोस्टन के उत्तरी तट पर मौजूद है। हर जगह सभास्थल हैं। तो डायस्पोरा यहूदियों का

बिखराव है। अब क्या होगा, और यह नए नियम के लिए क्यों महत्वपूर्ण है? पॉल एक सभास्थल से दूसरे सभास्थल पर जाएगा। जब पॉल किसी नए शहर में आता है, तो वह सबसे पहले सभास्थल पर जाता है। पॉल सभास्थल में जाएगा, वह सभास्थल में प्रचार करेगा, बहुत से लोग सुसमाचार प्राप्त करेंगे। वह दूसरे दिन वापस आएगा। वे उसे वापस आमंत्रित करेंगे। वह फिर से प्रचार करेगा, और जैसे ही वह फिर से प्रचार करेगा, उसका विरोध और भी बढ़ जाएगा और अंत में - यह सिर्फ रूढ़िबद्धता है - फिर वह तीसरी बार आता है, और जब तक वह तीसरी बार आता है, तब तक यहूदी लोग उस पर हमला कर देते हैं और वे उसे बाहर खींच लेते हैं और उसे पत्थर मारते हैं, या उसकी पिटाई करते हैं। इसलिए उन्होंने उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया और पौलुस को भी बाहर निकाल दिया। ऐसा बार-बार होता है, खास तौर पर पहली मिशनरी यात्रा में जैसा कि हम प्रेरितों के काम की किताब में देखेंगे।

आर. यहूदी धर्म की संस्थाएँ: संहेद्रिन [48:57- 53:09]

अब मैं फिर से यहूदी संप्रदायों, फरीसियों, सद्दूकियों, एसेनियों और ज़ीलॉट्स तथा डायस्पोरा (डायस्पोरा वास्तव में एक संप्रदाय नहीं है, यह यहूदियों का बिखराव मात्र है) से हटकर बात करना चाहता हूँ; मैं अब यहूदी धर्म की संस्थाओं के बारे में बात करना चाहता हूँ और उनमें से कुछ के बारे में बताना चाहता हूँ। ये संस्थाएँ जो नए नियम में आती हैं और वे एक भूमिका निभाने जा रही हैं, यीशु भी इनसे टकराने जा रहा है।

पहली संस्था जिसके बारे में मैं बात करना चाहूँगा वह है संहेद्रिन। संहेद्रिन एक यहूदी न्यायिक संरचना है। इसे उच्च पुजारी द्वारा चलाया जाता है। तो आपके पास कैफा है, यीशु के समय का उच्च पुजारी जो यीशु की निंदा करने वाला था। संहेद्रिन को उच्च पुजारी द्वारा चलाया जाता है, इसलिए सद्दूकियों ने इस पर प्रभुत्व किया। सद्दूकी धनी लोग थे, जो सक्रिय रूप से हेलेनिज़्म में शामिल हो गए थे। वे शास्त्रियों के साथ संहेद्रिन चलाते थे। जब आप शास्त्री कहते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे हर समय शास्त्र की नकल कर रहे हैं। वे कानूनी लोग हैं। जब आपके पास कानून के बारे में कोई सवाल होता है तो आप शास्त्रियों के पास जाते हैं। वे तकनीशियन हैं, विश्लेषक हैं, शायद यह कहना बेहतर होगा। वे कानून जानते हैं, इसलिए जब आपको कोई समस्या

होती है, तो आप शास्त्रियों के पास जाते हैं और शास्त्री आपको पाठ में क्या कहा गया है, इसका तकनीकी विवरण देते हैं। एल्डर्स बड़े लोग होते थे। वे एल्डर्स को उच्च पुजारियों के साथ रखते थे। महायाजक, शास्त्री और बुजुर्ग लोग महासभा होते थे। यह एक न्यायिक निकाय था। क्या आपको याद है कि मूसा न्यायिक व्यवस्था का सारा काम कर रहा था। यह संख्या 11 में वापस आता है और मूसा भगवान से कुछ मदद मांगता है और इसलिए भगवान मूसा से आत्मा लेकर उसे 70 लोगों पर डाल देते हैं। वे 70 लोग फिर इज़राइल में न्याय करते हैं और वे अदालती मामलों का फैसला करते हैं, न्यायिक निर्णय देते हैं और अगर उन्हें इससे कोई परेशानी होती है तो मूसा को मामला मिल जाता है लेकिन वे 70 लोग उसकी मदद करते हैं। तो महासभा उस तरह के मॉडल पर बनी है। 70 ईस्वी के बाद इसे भंग कर दिया गया; 70 ईस्वी के बाद महासभा को भंग कर दिया गया और जैसा कि हमने कहा कि इसे बड़े पैमाने पर सद्वक्तियों द्वारा चलाया जाता था।

अब सैन्हेद्रिन क्या कर सकता था? रोम के अधीन सैन्हेद्रिन के पास कुछ अधिकार थे। उनके पास गिरफ्तारी और मुकदमा चलाने का अधिकार था। वे किसी को गिरफ्तार कर सकते थे, और वे किसी पर मुकदमा चला सकते थे, और इससे उन्हें शक्ति मिलती थी। उनके पास मृत्युदंड का अधिकार नहीं था। दूसरे शब्दों में, सैन्हेद्रिन, जबकि वे लोगों को गिरफ्तार कर सकते थे और उन पर मुकदमा चला सकते थे, वे रोम की अनुमति के बिना किसी को मौत की सज़ा नहीं दे सकते थे। यह तब एक समस्या बन जाती है क्योंकि मसीह के समय में, सैन्हेद्रिन ने उनका परीक्षण किया। यीशु कैफ़ा और सैन्हेद्रिन के सामने जाते हैं और वे क्या करना चाहते हैं, "तुमने उसकी ईशनिंदा सुनी है, वह मृत्यु के योग्य है," और इसलिए वे सभी चिल्लाते हैं, "उसे सूली पर चढ़ाओ, उसे सूली पर चढ़ाओ!" लेकिन सैन्हेद्रिन उसे सूली पर नहीं चढ़ा सकते, वे उसे तब तक नहीं मार सकते जब तक उन्हें रोमन की स्वीकृति नहीं मिल जाती, इसलिए वे उसे पोंटियस पिलातुस के पास ले जाते हैं। पोंटियस पिलातुस इसलिए पहुँचता है क्योंकि सैन्हेद्रिन मृत्युदंड नहीं दे सकता; उन्हें रोम की अनुमति लेनी होती है। इसलिए वे यीशु को पोंटियस पिलातुस के पास ले गए और पोंटियस पिलातुस ने यीशु का साक्षात्कार लिया और पिलातुस की पत्नी ने कहा, "इस आदमी से सावधान रहना, मैंने इसके बारे में एक सपना देखा है।" फिर पिलातुस ने अपने हाथ धोए। पिलातुस ने बरअब्बास के साथ भी यही बात तय की, क्या आपको याद है? यह ठीक दावत के समय था इसलिए वह कैदियों में

से एक को मुक्त करने की कोशिश करता है पिलातुस कहता है, "क्या आप चाहते हैं कि हम बरअब्बास को या यीशु को मुक्त करें, आप किसे चाहते हैं?" क्योंकि वह जानता था कि वे यीशु का विरोध कर रहे थे। लोग चिल्लाते हैं, "हम बरअब्बास को मुक्त करना चाहते हैं" और यीशु क्रूस पर चढ़ने के लिए चले जाते हैं। पिलातुस ने अपने हाथ धोए। तो यह सैनहेड्रिन है और वे एक न्यायिक निकाय, एक सर्वोच्च न्यायालय के रूप में भूमिका निभाते हैं, अगर आप चाहें तो।

एस. यहूदी धर्म की संस्थाएँ: आराधनालय [53:09-55:33]

हमने आराधनालय और उसकी पृष्ठभूमि के बारे में बात की है। आराधनालय मुख्यतः मंदिर तक पहुँच न होने का परिणाम था। यहूदी पूरी दुनिया में फैले हुए थे, चाहे वे किसी भी शहर में हों, अगर उनके पास दस वयस्क पुरुष होते तो वे मूल रूप से एक आराधनालय बनाते। इसलिए प्राचीन दुनिया भर में और यहाँ तक कि वर्तमान में भी आराधनालय हैं। मूल रूप से, आपके पास दस घर के मुखिया होने चाहिए। आराधनालय के चार कार्य हैं।

आराधनालय का पहला कार्य एक विद्यालय के रूप में था, महत्व के संदर्भ में पहला कार्य नहीं, लेकिन आराधनालय ने एक विद्यालय के रूप में कार्य किया। यहूदी लोग जहाँ भी गए हैं, उन्होंने शिक्षा पर जोर दिया है। यहूदी लोग अपने लोगों को पढ़ना सिखाते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि वे धर्मग्रंथों को पढ़ें जिन्हें वे ईश्वर का वचन मानते हैं। इसलिए स्कूल बहुत महत्वपूर्ण हैं और यहूदी लोग हमेशा से बहुत ही शिक्षित लोगों का समूह रहे हैं। वह शिक्षा, आराधनालय से निकलेगी और आराधनालय हर जगह फैले हुए हैं।

आराधनालय एक पूजा स्थल था। लोग आराधनालय में भगवान की पूजा करने आते थे। यह कुछ मायनों में एक यहूदी तरह की अदालत प्रणाली भी थी, जो स्थानीय क्षेत्रों के विभिन्न नियमों के भीतर सरकार की अनुमति से यहूदी समुदाय के भीतर छोटे-छोटे फैसले लेती थी। यह काफी हद तक एक यहूदी अदालत प्रणाली थी।

और फिर सामाजिक: आपको एक निश्चित अर्थ में विवाह और दफ़न के लिए चर्च या आराधनालय की क्या ज़रूरत है। क्या यह तब है जब आप विवाह और दफ़न की प्रक्रिया में एक संस्कृति के बारे में बहुत कुछ देख सकते हैं? जब कोई जोड़ा विवाह करता है तो बहुत सारे सांस्कृतिक अनुष्ठान सामने आते हैं। मुझे लगता है कि आप फ़िडलर ऑन द रूफ और वहाँ की

शादियों को याद कर सकते हैं। फिर लोगों को फिर से दफ़नाना, उन्हें इस तरह से दफ़नाना होता है जो प्रवासी यहूदियों के बीच यहूदी धर्म की संस्कृति के अनुरूप हो। तो ये चार कार्य हैं और इसलिए आराधनालय। पॉल जब अपनी पहली, दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्रा पर गए तो वे लगातार इन आराधनालयों में आते रहे। कुरिन्थ में, आराधनालय के नेताओं में से एक भी ईसाई बन गया। तो आराधनालय ने ईसाई धर्म के प्रसार में वास्तव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ईसाई धर्म को मूल रूप से यहूदी धर्म का हिस्सा माना जाता था। तो यही आराधनालय है।

टी. आराधनालय में आराधना [55:33-59:33]

अब मैं सिर्फ़ आराधना सेवा के बारे में बताना चाहता हूँ ताकि इसे हमारे आधुनिक समय की चर्च सेवा से अलग किया जा सके। मूल रूप से यहूदी आराधना सेवा, आराधनालय सेवा, सबसे पहले वे शेमा कहते हैं। शेमा व्यवस्थाविवरण 6:4 के बाद आता है, "हे इस्राएल सुनो, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है।" सबसे प्रसिद्ध छंदों में से एक, मैं कसम खाता हूँ कि हर यहूदी इस छंद को जानता है। यह यहूदी धर्म के लिए यूहन्ना 3:16 है। "शेमा" का अर्थ है "सुनो" या "सुनो।" "हे इस्राएल सुनो, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है।" यह एकेश्वरवाद की पुष्टि है; यहूदी लोग एक रोमन साम्राज्य में बिखरने जा रहे हैं जो बहुदेववाद से भरा हुआ है। वे कहते हैं कि एक ईश्वर है और यहोवा उसका नाम है। और "तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे दिल, आत्मा और दिमाग से प्यार करोगे।"

और इसलिए शेमा का पाठ किया जाता है, फिर प्रार्थना होती है; फिर पवित्रशास्त्र। जब आप चर्च सेवा में आते हैं, तो सबसे महत्वपूर्ण क्या है, चर्च सेवा का ध्यान कहाँ है? अक्सर चर्च सेवा में ध्यान धर्मोपदेश, पवित्रशास्त्र की व्याख्या और धर्मोपदेश पर होता है, धर्मोपदेश 20-30 मिनट या उससे अधिक समय लेता है। यहूदी मंडलियों में धर्मोपदेश एक छोटा हिस्सा होता है, मुख्य ध्यान पवित्रशास्त्र के पठन पर होता है। इसलिए वे पवित्रशास्त्र के व्यापक और लंबे हिस्से पढ़ेंगे, एस्तेर की पूरी किताब पुरीम के पर्व पर पढ़ी जाती है। इसलिए वे पवित्रशास्त्र के बड़े हिस्से पढ़ेंगे और टोरा को पढ़ेंगे, ताकि लोग अपने जीवनकाल में टोरा को बार-बार पढ़ें। इसलिए धर्मग्रंथों का पठन आराधनालय सेवा का वास्तव में एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। फिर वे एक छोटा उपदेश, एक धर्मोपदेश

देंगे। और अंत में, वे एक पुजारी का आशीर्वाद लेंगे। आप जानते हैं, "प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हारी रक्षा करे, प्रभु अपना मुख तुम पर चमकाए, तुम पर अनुग्रह करे और तुम्हें शांति दे," इस तरह की बातें, गिनती 6:24 और उसके बाद, पुरोहिती आशीर्वाद। तो रब्बी आशीर्वाद देगा।

तो यह एक आराधनालय है और वैसे आप उत्तरी तट पर आराधनालय में जा सकते हैं और आप देखेंगे कि पवित्रशास्त्र को कितना महत्व दिया जाता है। हम वहाँ गए हैं, डॉ. विल्सन गॉर्डन कॉलेज के छात्रों के समूहों को वहाँ ले जाते हैं। मुझे याद है कि एक बार हम गए थे और आराधनालय में गए छात्रों ने पूरे समारोह में भाग लिया था। मुझे नहीं पता कि यह बार मिट्ज्वा था या नहीं। क्या आप लोग बार मिट्ज्वा और बैट मिट्ज्वा के बारे में जानते हैं? खैर, बार मिट्ज्वा, जब कोई बच्चा लगभग 12 वर्ष का होता है और वे वयस्क समुदाय में एक युवा लड़के या लड़की का स्वागत करना चाहते हैं, तो वे बार मिट्ज्वा कहते हैं, ("बार" का अर्थ है "बेटा" और "बैट" का अर्थ है "बेटी") और वे मूल रूप से वयस्क समुदाय में उनका स्वागत करेंगे। हम आराधनालय/चर्च सेवा में थे और सेवा के बाद। डॉ. विल्सन ने छात्रों को रब्बी से सवाल पूछने की अनुमति दी, और इसलिए रब्बी नीचे आए और छात्र सवाल पूछ रहे थे और उनसे सवालों की बौछार कर रहे थे। फिर छात्र चले गए और वे खाना खाने चले गए। छात्रों, आप जानते हैं कि यह कैसा है; गैर-गॉर्डन भोजन और आप बस इसके लिए जाते हैं। इसलिए मैं डॉ. विल्सन के साथ रहा और यह वास्तव में दिलचस्प था, जब रब्बी नीचे आए, तो रब्बी ने डॉ. विल्सन से तल्मूड के बारे में सवाल पूछना शुरू कर दिया। यह वास्तव में मज़ेदार था क्योंकि छात्रों ने रब्बी से सवाल पूछे थे और रब्बी नीचे आए और डॉ. विल्सन से पूछा, "आप तल्मूड से इस बारे में क्या सोचते हैं?" डॉ. विल्सन चले गए और उन्होंने रब्बी से यह बातचीत की और डॉ. विल्सन से पूछा कि वह क्या सोचते हैं। तो डॉ. विल्सन गॉर्डन कॉलेज के उन महान लोगों में से एक हैं, एक क्लासिक और यहूदी धर्म के बारे में पूरी तरह से समझने वाले। वास्तव में यहूदी लोग खुद उन्हें *मिश्पाह मानते हैं* जिसका अर्थ है "परिवार।" मैंने कभी किसी अन्य ईसाई को *मिश्पाह के रूप में नहीं सुना है*, इसलिए डॉ. विल्सन। यहाँ बोस्टन के उत्तरी तट पर भी आराधनालय संरचनाएँ हैं।

उस काल के यहूदी लेखक: जोसेफस और फिलो [59:33-62:01]

एफ. जोसेफस, फिलो, चर्च और इज़राइल

[लघु vi deos: गठबंधन UW; 59:33-64:52 समाप्त]

तो हमने सैन्हेड्रिन और आराधनालय के बारे में बात की है। दो संस्थाएँ, एक न्यायालय है, एक कुछ मायनों में चर्च की तरह है। अब यहूदी पृष्ठभूमि के बारे में कुछ नाम: जोसेफस। जोसेफस का समय 37 ई. से लेकर 100 ई. तक है। इसलिए जोसेफस तब जीवित था जब पॉल अपनी मिशनरी यात्राएँ कर रहा था, जब सुसमाचार लिखे जा रहे थे, और फिर जॉन ने 95-97 ई. के आसपास सर्वनाश लिखा। जॉन और जोसेफस की मृत्यु लगभग 100 ई. के आसपास एक ही समय में हुई। जोसेफस एक यहूदी इतिहासकार था। अब उसने रोमनों के साथ लिखा। वहाँ कुछ समझौता है लेकिन जोसेफस एक यहूदी इतिहासकार था और वह ग्रीक इतिहासलेखन पद्धति का उपयोग कर रहा था लेकिन वह उस अवधि में क्या हो रहा था, इसका इतिहास लिख रहा था। इसलिए उस समय अवधि के यहूदी इतिहासकार जोसेफस की कहानियों को पढ़ना बहुत दिलचस्प है, जब सुसमाचार लिखे जा रहे थे, जब पॉल के पत्र लिखे जा रहे थे और ईसाई धर्म का प्रसार शुरू हो रहा था। लेखक जोसेफस एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। वह “यहूदियों के पुरावशेष” और इस तरह की अन्य चीजें लिखते हैं।

फिलो एक और है। फिलो का समय 20 ईसा पूर्व से लेकर 50 ईस्वी तक था, इसलिए जब यीशु का जन्म हुआ, तब फिलो की उम्र शायद 15-16 साल रही होगी। वह वास्तव में जीवित है, (यीशु की मृत्यु समय से पहले हुई, जाहिर है, शायद उनकी उम्र 30 के आसपास थी) फिलो यीशु की मृत्यु के 20 साल बाद तक जीवित रहेगा; वह प्रेरितों के कार्य और प्रेरित पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा तक, 50 ईस्वी तक जीवित रहेगा। वह एक अलेक्जेंड्रिया यहूदी है। अब एक अलेक्जेंड्रिया यहूदी के रूप में, क्या वह ग्रीक संस्कृति में बहुत अधिक रुचि रखने वाला है? वह ग्रीक संस्कृति और ग्रीक सोच के तरीकों में बहुत अधिक आत्मसात होने वाला है। लेकिन वह ठीक उसी समय से होगा जब यीशु जीवित थे। फिलो नाम के इस व्यक्ति ने ग्रीक दर्शन और ग्रीक दर्शन को यहूदी धर्म के साथ मिलाने में गड़बड़ी की और इसलिए फिलो एक लेखक होगा। फिलो और जोसेफस पहली शताब्दी के दो प्रमुख यहूदी लेखक थे। इन लोगों के बारे में थोड़ा-बहुत जानना और यह जानना अच्छा है कि वे कौन थे। उन्होंने काफी साहित्य लिखा।

वी. ईसाई धर्म का यहूदी धर्म से अलग होना [62:01-63:31]

अब बाद में, जब ईसाई धर्म यहूदी धर्म से अलग हो गया, क्योंकि मूल रूप से ईसाई धर्म को यहूदी धर्म का एक संप्रदाय माना जाता था, तो आपके पास फरीसी और सद्दूकी और नाज़रीन थे। ये लोग ईसाई थे। वे वास्तव में यहूदी धर्म का हिस्सा थे और वे रोमन साम्राज्य के भीतर यहूदी धर्म की छत्रछाया में थे। अंततः ईसाई धर्म उस यहूदी छत्रछाया से बाहर निकल जाएगा और जब वे ऐसा करेंगे तो ईसाई रोमन साम्राज्य के साथ और अधिक परेशानी में पड़ जाएंगे। LXX और सेप्टुआजेंट को बाद के यहूदी धर्म द्वारा दूसरे स्वर्ण बछड़े के रूप में देखा गया, मुख्यतः इसलिए क्योंकि ईसाइयों ने सेप्टुआजेंट का उपयोग करना शुरू कर दिया और क्योंकि ईसाइयों ने इसका उपयोग यह साबित करने के लिए करना शुरू कर दिया कि मसीहा यीशु ही थे। फिर यहूदियों ने कहा, "उह, हमें सेप्टुआजेंट नहीं चाहिए," और इसलिए मूल रूप से यह हेलेनिज़्म का एक उत्पाद था और ईसाइयों ने सेप्टुआजेंट पर कब्ज़ा कर लिया, इसलिए यहूदियों ने मूल रूप से उस समय सेप्टुआजेंट को अस्वीकार कर दिया। आज दुनिया के कुछ सबसे महान सेप्टुआजेंट विद्वान यहूदी लोग हैं, इमैनुअल टोव और कुछ अन्य। लेकिन एक बदलाव हुआ। आरंभ में सेप्टुआजेंट सुसमाचार के प्रसार के लिए बहुत सहायक था, लेकिन यह यहूदियों के लिए भी बहुत सहायक था। ईसाइयों द्वारा इसे अपनाने के बाद सेप्टुआजेंट से दूर विचार में बदलाव आया और यहूदियों ने इसे तुच्छ समझा क्योंकि ईसाइयों ने इसके साथ जो किया था।

डब्लू. निष्कर्ष [63:31-64:52]

ठीक है, तो साहित्य, संप्रदायों और यहूदी धर्म की विभिन्न पृष्ठभूमियों और यहूदी संस्कृति के बारे में हमारी चर्चा समाप्त होती है, जिसमें नया नियम स्थित होने जा रहा है। मैं आगे क्या करना चाहूँगा और मैं इस बिंदु पर विराम लूँगा, वह है बाइबल को ईश्वर के वचन के रूप में चर्चा करना और हम प्रेरणा की प्रक्रिया, विहितीकरण की प्रक्रिया, पुस्तकों को कैसे स्वीकार किया गया और उन पुस्तकों को कैसे प्रसारित किया गया, इस पर चर्चा करेंगे। उनकी नकल कैसे की गई, कैसे की गई और कैसे की गई और अनुवादों के बारे में थोड़ी बात करेंगे और कैसे नया नियम ग्रीक से

अंग्रेजी में आया। मैं अगली प्रेरणा, विहितीकरण, फिर लिपिक संचरण और नकल, अनुवाद और हमारे आधुनिक अनुवादों पर चर्चा करना चाहूँगा। मैं इसे आगे कवर करना चाहूँगा। तो आपके ध्यान के लिए धन्यवाद।

एशले होल्म द्वारा लिखित
जेन स्ट्राका द्वारा संपादित
रफ़ संपादित टेड हिल्लेब्रांट द्वारा